Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

तबला वादन के परिप्रेक्ष्य में दिल्ली घराने के कायदे एवं उनकी विशेषताएँ

PRAKASH CHANDRA ARYA[1] & DR. GAGANDEEP HOTHI[2]

[1]Research Scholar, Department of Music, Kumaun University, Nainital
[2]Assistant Professor, Department of Music, D.S.B Campus, Kumaun University, Nainital

सारांश

कायदा तबले की प्राथमिक व सबसे प्राचीनतम रचना है। तबला एकल वादन में कायदा रचना अपना विशेष महत्व रखती है। सोलहवीं शताब्दी के आस-पास उस्ताद सिद्धार खान ने दिल्ली घराने की नीव डाली. दिल्ली घराने से ही कायदे की उत्पत्ति मानी जाती है. प्रत्येक घराने कायदे का वादन होता है, परंतु दिल्ली घराने में यह रचना अपना विशेष स्थान रखती है। कायदा रचना तबले की एक विस्तारशील रचना है. दिल्ली घराने में कई योग्य कलाकार हुए जिन्होंने दिल्ली घराने के कायदों को विशेष पहचान दिलाई. दिल्ली घराने के कायदे मुख्यतः चतुस्र जाति में निबद्ध होते हैं तथा दिल्ली घराने के कायदे एक आवर्तन से अधिक के नहीं होते हैं। दिल्ली घराना किनार के बाज के रूप में जाना जाता है, इस कारण दिल्ली घराने के कायदों में चांटी के बोलों की प्रधानता सदैव देखने को मिलती है। इसके अतिरिक्त दिल्ली घराने के कायदों में धा तिट, तिरकिट, धागे, घेना तिट, धाति आदि बोलों की प्रधानता देखने को मिलती है।

उद्देश्य- दिल्ली घराने के कायदों की विशेषता एवं सौन्दर्यता ज्ञात करना।

तबला एकल वादन में दिल्ली घराने के कायदों की महत्ता ज्ञात करना।

मुख्य शब्द- संगीत, तबला वादन, कायदा, दिल्ली घराना।

प्रस्तावना

भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही गायन, वादन व नृत्य कला को संगीत के रूप में परिलक्षित किया जाता रहा है। संगीत में गायन विधा को प्रधान अंग तथा वादन और नृत्य को उसके सहायक के रूप में जाना जाता है। मुख्यतः संगीत रचना के दो आधारभूत तत्व माने गए हैं, प्रथम ध्वनि व द्वितीय काल। ध्वनि के द्वारा स्वर एवं काल के द्वारा ताल की उत्पत्ति मानी जाती है। स्वर एवं ताल को अभिव्यक्त करने वाले ध्वनि उत्पादक उपकरणों को भारतीय संगीत में वाद्य कहा जाता है। वाद्यों को मुख्यतः चार श्रेणियों में विभक्त किया गया है। तत वाद्य, सुषिर वाद्य घन वाद्य और अवनद्य वाद्य। जिसमें तत वाद्य व सुषिर वाद्य स्वर प्रधान तथा घन वाद्य व अवनद्ध वाद्य ताल प्रधान होते हैं। भारतीय संगीत में वैदिक काल से ही अनेकों अवनद्ध वाद्य प्रचलन में आए। प्राचीन ग्रंथों में यह वर्णित है कि प्राचीन काल में भूमि दुन्दुभि, दुन्दुभि नामक अवनद्ध वाद्यों की उत्पत्ति हुई। तत्पश्चात स्वाति ऋषि ने तालाब में फैले हुए कमल पत्रों पर गिरती हुई जल की बूंदों की ध्वनि से तथा दुन्दुभि वाद्य को आधार बनाकर त्रिपुष्कर नामक वाद्य का निर्माण किया। जिससे आगे चलकर मृदंग, मुरज, पटह, खोल, तबला आदि वाद्य विकसित हुए। अवनद्ध वाद्यों की संरचना, आकृति, निर्माण पदार्थ, ध्वनि, न्यास, वादन प्रक्रिया और प्रयोग के आधार पर अनेक भेद पाए जाते हैं। जिनमें तबला वाद्य वर्तमान समय का सर्वप्रमुख कलात्मक एवं लोकप्रिय ताल वाद्य है। तबला वाद्य की उत्पत्ति के विषय में कोई ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। कुछ लोग इसे अरबी भाषा के ''तब्ल'' से विकसित होकर बना मानते हैं, तो कुछ इसे अल्लाउद्दीन खिलजी(1290-1320) कालीन हजरत अमीर खुसरो, उस्ताद सिद्धार खां, खब्बे हुसैन ढोलकिया का आविष्कार मानते हैं। तबले की उत्पत्ति का उचित इतिहास तो प्राप्त नहीं होता है परंतु यह अवश्य कहा जा सकता है कि इस वाद्य उत्पत्ति काल 1600 ई0 के आस-पास का रहा होगा। भारतीय संगीत विद्वानों का मानना है कि ताल वाद्य पुष्कर से तबला वाद्य की उत्पत्ति हुई है, क्योंकि पुष्कर वाद्य ही एक ऐसा वाद्य था जिसे खड़े होकर बजाया जाता था। तबला वाद्य अलाउद्दीन खिलजी के समय से अधिक प्रचार में आया। परंतु इससे पूर्व तबला वाद्य की क्या स्थिति थी, इस विषय में कोई ठोस प्रमाण प्राप्त नहीं होते हैं। इस वाद्य का नामकरण तबला किस प्रकार पड़ा, इस विषय में भी कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

तबला वाद्य की उत्पत्ति से संबंधित विद्वानों के कुछ मत

पं0 सत्य नारायण वशिष्ठ के अनुसार- तबला जोड़ी के निर्माण में पखावज और नगाड़ा ये दोनो वाद्य सहायक है। पखावज के दाहिने भाग तथा तबले में काफी समानता है। पखावज की दायी पूड़ी में चांटी, लव, स्याही, गजरा आदि दाये तबले के समान है। अन्तर केवल इतना है कि तबले के समान पखावज में ईडरी नही होती, बल्कि उसके स्थान पर बायी पूड़ी गुंथी होती है। इसका दायॉ भाग तो तबले के लिए अत्यन्त ही उपयोगी सिद्ध हुआ।[1]

डॉ0 अरूण कुमार सेन के अनुसार- यह पूर्णतया फारसी वाद्य है और फारस के ''तबल'' नामक वाद्य का भारतीय रूपान्तर है और इसका आविष्कारक ''सिकन्दर'' है और फारस जीतने के आद उसे इस यंत्र का आविष्कार किया।[2]

इस प्रकार तबले की उत्पत्ति से संबंधित कई मत देखने को मिलते हैं। परंतु कोई भी मत स्पष्ट रूप से तबले की उत्पत्ति व काल को प्रमाणित नहीं करता है। आज के समय में तबला वाद्य अवनद्ध वाद्यों की श्रेणी का सर्वाधिक लोकप्रिय व प्रचलित वाद्य है। वर्तमान समय में गायन, स्वर वाद्य व नृत्य सभी विधाओं में तबले की संगति सर्वोपरि है। भारतीय संगीत के अतिरिक्त पाश्चात्य संगीत में भी तबला वाद्य अपना विशिष्ट स्थान बना रहा है। इसके अतिरिक्त इस वाद्य पर नवीन ठेकों का सृजन हुआ, इस वाद्य का वादन द्रुत लय में आसानी से किया जा सकता था, विभिन्न घरानों के निर्माण के कारण वादन सामग्री की अधिकता, अन्य वाद्यों के बोलों का निकास व एकल वादन के कारण भी यह वाद्य अत्यधिक प्रचलन में आया है।

प्रारंभ में उत्तर भारत में ध्रुपद-धमार जैसी गंभीर प्रकृति की गायन शैली प्रचार में थी, जिसके साथ पखावज जैसे गंभीर वाद्य की संगति उपयुक्त मानी जाती थी। परंतु तत्पश्चात ख्याल गायकी का प्रचार-प्रसार प्रारंभ हुआ यह गायन शैली कोमल प्रकार की गायन शैली थी, जिसके साथ पखावज जैसे गंभीर वाद्य की संगति उपयुक्त न थी। अब अन्य अवनद्ध वाद्य की आवश्यकता होने लगी, जो ख्याल गायन की संगति हेतु उपयुक्त सिद्ध हो। फलस्वरूप 16 वीं शताब्दी के आस-पास तबला वाद्य का जन्म हुआ। ख्याल गायन की संगति के अतिरिक्त तबला वाद्य की संगति तंत्र वाद्यों हेतु भी अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुई।

प्रारंभ में तबला वाद्य का प्रयोग गायन, वादन व नृत्य की संगति हेतु किया जाता था, चूंकि ख्याल गायकी व तंत्र वाद्यों की संगति में संगतकार को कड़े नियमों का पालन करना पड़ता था। स्वतंत्र वादन हेतु तबले को अपने बोलों की आवश्कता हुई, चूंकि तबले से पूर्व पखावज वाद्य का अधिक प्रचलन था, फलस्वरूप पखावज के बोलों को ही आधार बनाया गया। धा, ता, दिं, तिट, तिरकिट, धाती, क्ड़धा आदि महत्वपूर्ण वर्ण तबले को पखावज से प्राप्त हुए। तबला वादकों ने अपने बोलों में नक्कारा, मृदंग, ढोलक और नृत्य इत्यादि बोलों से लेकर इसको साहित्य में अद्भुत वृद्धि कर ली। प्रारंभ में तबले के बोलों को ख्याल गायन की संगति के अनुरूप बनाया गया। परंतु धीरे-धीरे उस काल के तबला वादकों ने अपने सतत प्रयासों के फलस्वरूप तबले की विस्तारशील रचनाओं जैसे- पेशकार, कायदा, गत आदि रचनाओं की उत्पत्ति की जिससे इस वाद्य का प्रयोग स्वतंत्र वादन हेतु पूर्ण रूप से होने लगा। तबले की अलग-अलग वादन शैली आज विभिन्न घरानों के नाम से जानी जाती है।

कायदा

तबले की विभिन्न रचनाओं में कायदा रचना अपना विशेष स्थान रखती है। कायदा तबले की एक महत्वपूर्ण विस्तारशील रचना है। कायदा शब्द अरबी भाषा के कैद शब्द से लिया गया है। कुछ निश्चित बोलों को एक नियम के अनुसार(ताल के अनुसार) बांधना कायदा कहलाता है। कायदों का निर्माण किस आधार पर हुआ होगा यह कहना अत्यधिक कठिन है। इसका कारण यह है कि प्राचीन शास्त्रो में तबले का उल्लेख कहीं भी प्राप्त नहीं होता है। नाट्यशास्त्र, संगीत रत्नाकर आदि ग्रंथों में केवल मृदंग, पणव एवं दर्दुर आदि अन्य वाद्यों का उल्लेख ही किया गया है। इनमें से मृदंग परिवर्तित होते हुए आज हमारे मध्य पखावज के रूप में उपलब्ध है परंतु पखावज की बंदिशों में कायदा शब्द का उल्लेख नहीं है। जहां तक पेशकार, कायदा और रेला इन विस्तारशील

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

बंदिशों का प्रश्न है तो रेला पखावज से लिया गया है जो पखावज में बजने वाली पड़ालों का एक छोटा रूप है। परंतु जब कायदे की बात आती है। तो इस बंदिश का संबंध केवल तबले से ही दिखता है अर्थात् पखावज तथा तबले की विभिन्न बंदिशों की ओर यदि ध्यान से देखा जाए तो निर्विवाद रूप से यह कहा जा सकता है कि विस्तार की अत्यधिक क्षमता के कारण कायदे को अन्य बंदिशों की तुलना में अधिक महत्व प्राप्त है।[3]

वस्तुतः तबले के कुछ वर्णो को चुनकर तथा उन्हे एक विशेष नियमबद्ध तरीके से पिरोकर ताल की ताली खाली मात्रा एवं विभागीकरण को ध्यान में रखते हुए कायदा नाम रचना का निर्माण किया जाता है। विद्वानों द्वारा कायदे से संबंधित दी गई परिभाषाऐं निम्न प्रकार हैं-

पं0 केशव रघुनाथ तलेगांवकर जी के अनुसार- बोलों की क्रमबद्ध रचना जो ताल के विभानुसार हो तथा जिसका पर्याप्त रूप से विस्तार हो सके, उसे हम कायदा की संज्ञा देंगे।[4]

धा	धा	ति	ट	।	धा	धा	तू	ना
x					2			
ता	ता	ति	ट	।	धा	धा	धी	ना
0					3			

श्री मधुकर गणेश गोडबोले जी कहते हैं- बोलों के उस नियमित समूह को कायदा कहते है, जिसकी रचना ताल के विभाग और ताली खाली के अनुसार होती है और जिसके बोलों का विविध विस्तार संभव होता है।[5]

दिल्ली घराना उत्पत्ति एवं विकास

श्री अरविन्द मुलगांवकर ने इस घराने का उदयकाल 1500 ई0 से 1600 ई0 के मध्य माना है।[6]

तबले के मुख्यतः 6 घराने माने जाते हैं, जिसमें दिल्ली घराने को तबले का सर्वप्रथम घराना होने का श्रेय प्राप्त है। उस्ताद सिद्धार खां दाढ़ी को दिल्ली घराने के प्रवर्तक के रूप में जाना जाता है। दिल्ली घराने का उत्पत्ति काल लगभग 1700 ई0 के आस-पास का माना जाता है। शोध से यह ज्ञात हुआ है कि उनके समय में खब्बे हुसैन ढोलकिया, नियामत खां, सदारंग, खुसरो खां, पखावज वादक भवानी सिंह आदि प्रसिद्ध कलाकार थे।[7]

उस्ताद सिद्धार खां जिन्होंने दिल्ली घराने की नींव रखी के कई वर्षों के अथक प्रयासों के फलस्वरूप ही तबले की वादन शैली का निर्माण संभव हो सका। इन्होंने ही तबले के बाऐं भाग पर आटे के स्थान पर लौह चूर्ण युक्त स्याही का प्रयोग किया, जिससे बांऐं भाग की गमक पर और प्रभाव दिखे। उस्ताद सिद्धार खां ने जिस वादन शैली का निर्माण किया उसमें चांटी के बोलों की अधिकता थी, साथ उन्होंने तर्जनी व मध्यमा दो अंगुलियों के प्रयोग पर अधिक बल दिया। इसके अतिरिक्त उस्ताद सिद्धार खां ने कुछ विस्तारशील बंदिशों जैसे- पेशकार, कायदा, रेला तथा कुछ अविस्तारशील रचनाओं जैसे- मुखड़ा, मोहरा, गत, टुकड़ा आदि की रचना की।

दिल्ली घराने की वंश परंपरा नीचे तालिका द्वारा समझाई गयी है

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

दिल्ली घराने की वंश परंपरा

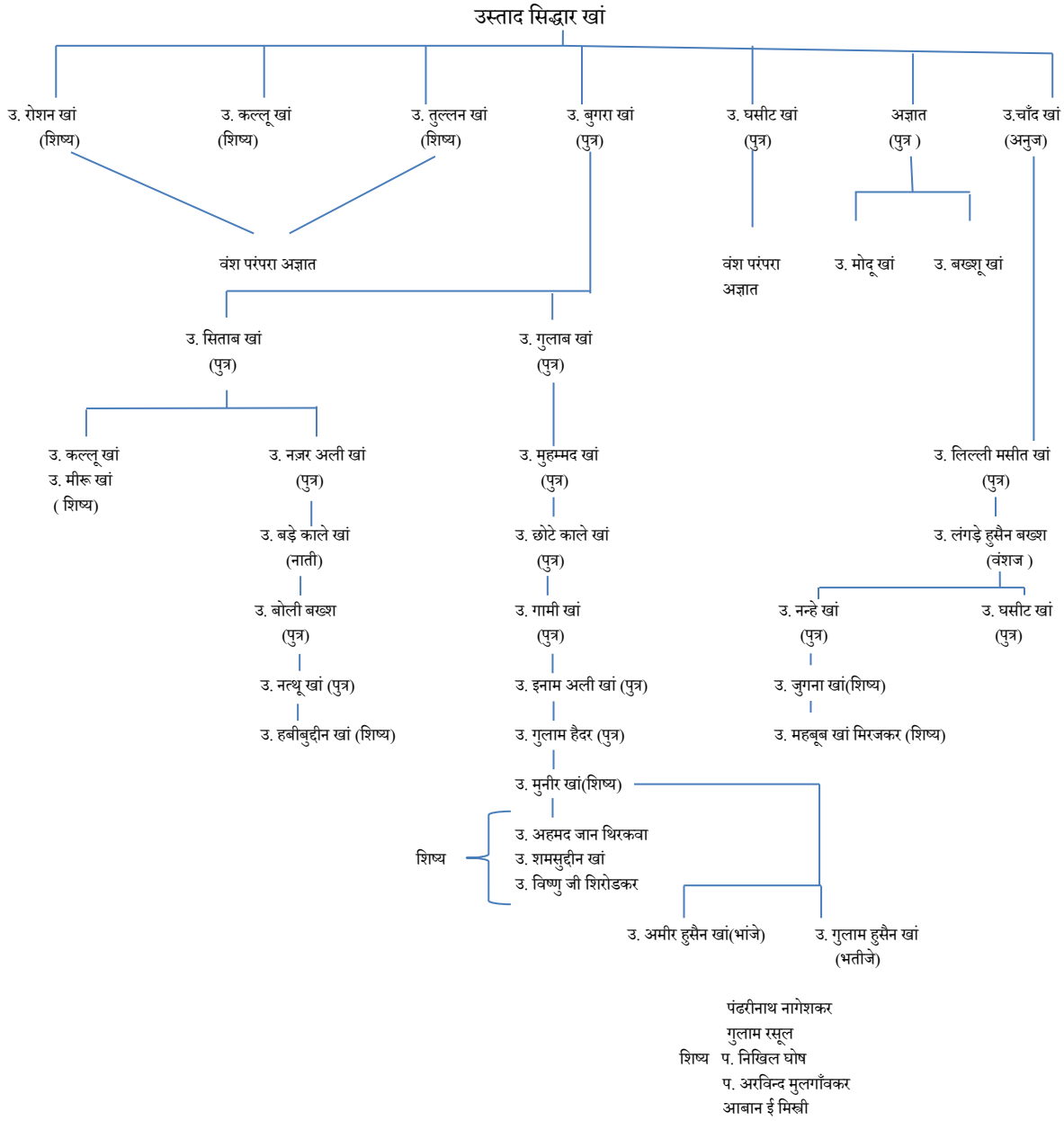

इसके अतिरिक्त दिल्ली घराने के अन्य प्रसिद्ध तबला वादकों में उ0 लतीफ अहमद खॉ, उनके पुत्र अकबर लतीफ खॉ व बाबर लतीफ खॉ का नाम मुख्य रूप से लिया जाता है। साथ ही इसके अतिरिक्त पंडित गोपाल दास निर्माण, उनके शिष्य मोतीलाल निर्माण व उनके पुत्र पंडित सुभाष निर्माण भी दिल्ली घराने के प्रमुख तबला वादक हुए। पंडित सुभाष निर्माण के पुत्र सूरज निर्माण वर्तमान में दिल्ली घराने की परंपरा को अग्रसित कर रहे हैं।

दिल्ली घराने की शैलीगत विशेषताऐं

- दिल्ली घराने में चांटी के बोलों की प्रधानता रहती है, जिस कारण इसे किनार के बाज के रूप में भी जाना जाता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

- दिल्ली घराने के तबला वादन में दो उंगलियों का अधिक प्रयोग होता है, जिस कारण यहॉ की वादन शैली में कोमलता अधिक प्रतीत होती है।
- दिल्ली घराने के कायदे मुख्यतः चतुस्त्र जाति में निबद्ध होते हैं।
- इस घराने में पेशकार, कायदा, रेला, मुखड़ा, मोहरा, छोटे-छोटे टुकडे तथा विभिन्न प्रकार की गतें विशेष रूप से बजायी जाती है।
- दिल्ली घराने के तबला वादन में मुख्यतः बंद बोलों जैसे- तिट, तिरकिट, धाति, धागे, धाति धागे, त्रक, तीना केना, धीनगेन, धौक्रेन, धित्त, घेनक, आदि की प्रधानता देखने को मिलती है।
- पेशकार इस घराने की सुन्दर रचना है। इस घराने में स्वतंत्र तबला वादन का प्रारंभ पेशकार बजाकर किया जाता है इसके पश्चात कायदे, रेला, मुखड़ा, मोहरा एवं छोटे-छोटे टुकड़े इत्यादि रचनाऐं बजायी जाती है। इस घराने में कायदे विशेष रूप से बजाए जाते है।
- दिल्ली घराना अति द्रुत गति के लिए भी विशेष रूप से प्रसिद्ध है, जिस कारण इसे गति में प्रथम चरण स्थान प्राप्त है।
- इस बाज के अंतर्गत तबले के शुद्ध बाज के दर्शन होते है।

दिल्ली घराने के कुछ कायदे एवं उनकी विशेषताऐं

कायदा-1

धाति	टधा	तिट	धाधा	।	तिट	धागे	तिना	किना
X					2			
ताति	टता	तिट	ताता	।	तिट	धागे	धिना	गेना[8]
0					3			

प्रस्तुत कायदे को दिल्ली घराने के प्रारंभिक कायदे के रूप में जाना जाता है। यह कायदा चतुस्त्र जाति में निबद्ध है। दिल्ली घराने के तबला वादकों के अतिरिक्त प्रत्येक घराने के तबला वादक इस कायदे का वादन करते आ रहे हैं। इस कायदे की उत्पत्ति धाधा तिट धाधा तिना कायदे से मानी जाती है। प्रस्तुत कायदे में मुख्य बोल धा तिट धा तिट है व इसके अतिरिक्त कायदे का विस्तारशील बोल भी है तथा धागे तीना किना व धागे धीना गीना बोलों का प्रयोग कायदे की समाप्ति हेतु किया गया है। कायदे में चार-चार मात्राओं के चार विभाग हैं, चूंकि कायदा तीनताल में निबद्ध है जिस कारण चार-चार मात्राओं के चार विभाग प्रस्तुत किए गए हैं। पहले विभाग में धाति टधा तिट धाधा तथा दूसरे विभाग में तिट धागे तिना किना वर्णो का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार तृतीय विभाग में ताति टता तिट ताता व चतुर्थ विभाग में तिट धागे धिना गेना बोलों का प्रयोग किया गया है। यह रचना दुगुन में निबद्ध की गई है।

कायदा-2

धाति	धागे	नधा	तिरकिट	।	धाति	धागे	तीना	केना
x					2			
ताति	ताके	नता	तिरकिट	।	धाति	धागे	धीना	गेना[9]
0					3			

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

प्रस्तुत कायदा चतुस्र जाति में निबद्ध है। इस कायदे में मुख्य विस्तारक्षम बोल धाति धागे तथा सहविस्तारक्षम बोल नधा तिरकिट है। तीना केना व धीना गेना बोलों के द्वारा कायदे की समाप्ति की गई है। यह कायदा दिल्ली घराने के प्रसिद्ध कायदों की श्रेणी में आता है। यह कायदा दुगुन की लय में निबद्ध किया गया है, परंतु इसका वादन चौगुन की लय में सुन्दर प्रतीत होता है। प्रस्तुत कायदे में ति बोल का वादन मध्यमा अंगुली से किया जाता है। जिस कारण दिल्ली घराने की वादन विशेषता साफ-साफ प्रकट होती है। धाति धागे बोल से इस कायदे का विस्तार प्रारंभ होगा। तत्पश्चात पल्टो द्वारा धीरे-धीरे प्रस्तुत कायदे का विस्तार किया जाएगा।

कायदा-3

घेनातिट	घेनाधागे	धिनाघेना	तिटघेना।	धागेधिना	घेनातिट	घेनाधागे	तिनाकिना	
x				2				
केनातिट	केनाताके	तिनाकेना	तिटकेना।	ताकेतिना	घेनातिट	घेनाधागे	धिनागिना[10]	
0				3				

प्रस्तुत कायदा चतुस्र जाति में निबद्ध है। इस कायदे में मुख्य विस्तारक्षम बोल घेना तिट तथा सहविस्तारक्षम बोल घेना धागे है। तीना केना व धीना गेना बोलों के द्वारा कायदे की समाप्ति की गई है। यह कायदा भी दिल्ली घराने के प्रसिद्ध कायदों की श्रेणी में आता है। यह कायदा दुगुन की लय में निबद्ध किया गया है, परंतु इसका वादन चौगुन की लय में सुन्दर प्रतीत होता है। प्रस्तुत कायदे में घेना तिट व घेना धागे बोलों से में रंजकता प्रतीत होती है। घेना तिट बोल से कायदे का विस्तार प्रारंभ होगा। तत्पश्चात पल्टो के द्वारा कायदे का विस्तार किया जायेगा।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि दिल्ली घराना कायदा वादन में एक विशेष स्थान रखता है। दिल्ली घराने के कायदों में चांटी तथा स्याही के बोलों की प्रधानता देखने को मिलती है। दिल्ली घराने में अधिकतर कायदों के बोलों का निकास तर्जनी व मध्यमा से किया जाता है। इस घराने के कायदों में सीमित बोलों का ही प्रयोग देखने को मिलता है। दिल्ली घराने के कायदों में मुख्यतः विस्तारक्षम बोल एक ही देखने को मिलता है, ऐसा कम ही देखने को मिलता है , जब विस्तारक्षम बोल एक से अधिक हो । इस प्रकार दिल्ली घराना कायदा वादन में अपना अलग वर्चस्व स्थापित करता है। वर्तमान में दिल्ली घराने के कई प्रतिष्ठित कलाकार दिल्ली घराने की परंपरा को अग्रसारित कर रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. वशिष्ठ पं0 सत्यनारायण,(1994), तबले पर दिल्ली और पूरब,संगीत कार्यालय हाथरस, पृ0सं0-10
2. सेन डा0 अरूण कुमार,(2005), भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी भोपाल,पृ0सं0-145
3. पटेल श्री जमुना प्रसाद,(2011), तबला वादन की विस्तारशील रचनाऐं,कनिष्क पब्लिसर्स, पृ0सं0-79
4. पटेल श्री जमुना प्रसाद, (2011),तबला वादन की विस्तारशील रचनाऐं, कनिष्क पब्लिसर्स, पृ0सं0-80
5. पटेल श्री जमुना प्रसाद, (2011),तबला वादन की विस्तारशील रचनाऐं, कनिष्क पब्लिसर्स, पृ0सं0-80,81
6. मुलगांवकर श्री अरविन्द,(2018), तबला,ल्यूमिनस बुक्स वाराणसी, पृ0सं0-231
7. मिस्त्री डा0 आबान ई0,(1984) पखावज और तबले के घराने एवं परंपराऐं,स्वर साधना समिति बम्बई, पृ0सं0- 122
8. गुरू जी डॉ0 विजय कृष्ण,पूर्व विभागाध्यक्ष कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल से प्राप्त
9. पूर्वोक्त
10. पूर्वोक्त